P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-I* ISSUE- VIII* November - 2016
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

समाज में मूल्यों का क्षरण : कारण व समाधान

सारांश

'मूल्यपरक शिक्षा' की आज जितनी आवश्यकता अनुभव की जा रही है उतनी पहले कभी नहीं थी, क्योंकि आज हम एक गहन संक्रान्ति काल से गुजर रहे हैं। हमारे प्राचीन परंपरागत मूल्यों में कुछ तो पूर्णतः विघटित हो चुके हैं और कुछ बड़ी तीव्र गति से विघटित हो रहे हैं, किंतु नये मूल्य अभी प्रतिष्ठित अथवा स्थापित नहीं हो पाये हैं। आज सदाचरण, सत्य, अहिंसा, प्रेम, शांति जैसे शाश्वत एवं परंपरागत मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा की महती आवश्यकता है। ये मूल्य न केवल व्यक्तिगत उत्थान के लिए अपितु सामाजिक एवं राष्ट्रीय प्रगति एवं शांति के लिए भी परम आवश्यक है।

'ऐसी ही कुछ ज्वलंत मुद्दों पर आधारित है यह लेख जिसका शीर्षक ''समाज में मूल्यों का क्षरण कारण व समाधान है'', इस कुहासे में उजाले की एक किरण जलाने का यह स्वप्न पूरा हो पाएगा।

अन्ततः इस लेख का यही संदेश है जो कवि दुष्यंत की वाणी से निकला है। सिर्फ हंगामा खड़ा करना। मेरा मकसद नहीं, मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए। मेरे सीने में न सही तो तेरे सीने में सही, हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए।

मंजय कुमार
वरिष्ठ प्रवक्ता,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
आई.एम.आर, दुहाई,
गाजियाबाद

मुख्य शब्द : मूल्यों की शिक्षा, मूल्य समाहित या मूल्यपरक शिक्षा।

प्रस्तावना

भारत अपनी कला, संस्कृति, दर्शन आदि की गौरवशाली परम्पराओं पर सदैव गर्व करता रहा है। उसे धर्मगुरू की उपाधि से विभूषित भी किया गया पर आज उसी धर्मगुरू भारत वर्ष के बच्चे पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर उसका अन्धानुकरण कर रहे हैं। इस क्रम में वे अपनी गौरवमयी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं और इसे विडम्बना ही कहा जाएगा कि आज देश के प्रायः सभी राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक और शैक्षिक मंचों से जीवन मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करने की माँग जोर पकड़ती जा रही है। आज ऐसे समय में जब सभी इस बात को लेकर चिन्तित हैं कि मूल्यों का ह्रास हो रहा है तब मूल्यपरक शिक्षा बहुत अधिक प्रासंगिक हो जाती है।

उद्देश्य

1. लोगो को समाज में मूल्यो के वास्तविक महत्व से अवगत कराना।
2. समाज में मूल्य क्षरण के वास्तविक कारणों को जानना।
3. समाज के लोगो को मूल्य क्षरण के वास्तविक समाधान से अवगत कराना।

मूल्य शिक्षा को दो अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है वे इस प्रकार हैं।

1. मूल्यों की शिक्षा तथा
2. मूल्य समाहित या मूल्यपरक शिक्षा ।

प्रथम के अन्तर्गत हम नैतिक, सामाजिक, साँस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा इतिहास, भूगोल, जीव शास्त्र, रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र आदि की शिक्षा की भाँति एक स्वतन्त्र विषय के रूप में देना चाहते हैं।

मूल्य समाहित या मूल्यपरक शिक्षा में सभी विषयों में मनोवैज्ञानिक ढंग से मूल्यों को समाहित करके उक्त मूल्यों के विकास पर बल देते हैं। आज के भारतीय संदर्भ में मूल्य शिक्षा को दूसरे अर्थ के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

अब प्रश्न उठता है कि मूल्य तो व्यक्ति अपने समाज की विभिन्न क्रियाओं में भाग लेने से स्वयं ग्रहण करता है इन्हें औपचारिक रूप से सिखाने अथवा विकसित करने की क्या आवश्यकता है? वस्तुतः देखा जाये तो मूल्यों की शिक्षा बच्चे के घर से शुरू होती है। परिवार वह संस्था है जहाँ बालक का समाजीकरण शुरू होता है और वही वह जीवन की प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करता है। परिवार का अपनापन उसे शिष्टाचार तथा सदाचार की शिक्षा देता है परन्तु आज हमारे समाज की व्यवस्था ऐसी होती जा रही है कि संयुक्त परिवार टूटते

जा रहे हैं और उनका स्थान एकाकी परिवारों ने ले लिया है जहाँ अभिभावक व बच्चे ही होते हैं। अभिभावकों के कामकाजी होने से उनके पास बच्चों को देने के लिए पैसा तो होता है पर समय नहीं। वे समय के अभाव की पूर्ति पैसे से करके अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं फलतः मूल्य संवर्धन हेतु अध्यापकों की भूमिका अधिक प्रभावी हो जाती है क्योंकि माता–पिता के बाद बच्चा अपने शिक्षकों के ही सबसे करीब होता है। वह अपने जीवन का महत्वपूर्ण समय अपने अध्यापकों के साथ ही व्यतीत करता है। वह उन्हें अपना आदर्श मानता है। छात्र शिक्षक में कहीं न कहीं अपनी छवि ढूँढ़ता है। छात्र शिक्षकों की गतिविधियों पर अत्यधिक ध्यान देते और उनका अनुकरण करने की कोशिश करते हैं।

अध्यापकों के बारे में यह कहा जाता है कि किसी भी बड़े परिवर्तन के लिए इससे अधिक उपयुक्त उपलब्ध वर्ग कोई नहीं हो सकता। शैक्षिक क्षमताओं के साथ–साथ अध्यापकों के उत्तरादियत्वों में अपने व्यवसाय तथा गुणवत्ता के प्रति प्रतिबद्धता लगातार बढ़नी चाहिए। इसी के साथ मानवमूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता सदा ही समाज की निगाह में रहती है। शिक्षा में नैतिक मूल्यों का स्थान कमजोर हुआ है, यह सर्वविदित है। मूल्यों के सृजन तथा विकास की जिम्मेदारी अध्यापकों की है अतः प्रशिक्षण संस्थाओं के पाठ्यक्रमों में मूल्यों की शिक्षा को उचित स्थान देने की प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

दैनिक क्रियाकलापों में प्रार्थना स्थल से विद्यालय बन्द होने तक अनेक ऐसे अवसर आते हैं जिनके माध्यम से अध्यापक छात्रों में मूल्यों का विकास कर सकता है आवश्यकता है तो बस अपनी जिम्मेदारी को समझने की व सकारात्मक दृष्टिकोण बनाये रखने की।

अगर अध्यापक छात्रों में मूल्यों का विकास करना चाहते हैं तो इसके लिए सबसे पहली आवश्यकता है कि छात्र अध्यापकों का कहना माने और उनकी बताई बातों पर अमल करने की कोशिश करें फलतः अध्यापकों को छात्रों के साथ अच्छा तादात्म्य स्थापित करना होगा तत्पश्चात एक शिक्षक होने के नाते अपने छात्रों में मूल्यों का विकास करने के लिए शिक्षकों को स्वयं उन मूल्यों पर चलना होगा जिन मूल्यों को अपनाने में मूल्यों का अन्तर्वेशन करने के पश्चात् ही उनका प्रकटीकरण सरलतापूर्वक किया जा सकता है और तभी वे मूल्य छात्रों में परावर्तित हो सकेंगे। मूल्यों के प्रति स्वयं आस्थावान रहकर ही विविध पक्षों में छात्रों के लिए मूल्य निर्माण का कार्य किया जा सकता है अन्यथा 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' वाली स्थिति आ सकती है। गाँधी के अनुसार

''मेरे विचार से सभी धर्मों में जो सामान्य सत्य हो, वे सभी छात्रों को बताये जाने चाहिए। इसके लिए सर्वप्रथम शिक्षकों को इन सत्यों का अपने जीवन में उतारना होगा। शिक्षक के आचरण का अनुकरण करके ही बच्चे सत्य एवं न्याय जैसे जीवनमूल्यों को जो कि सभी धर्मों का आधार है, सीख सकेगें। ये जीवनमूल्य शब्दों या पुस्तकों के माध्यम से नहीं सिखाये जा सकते।''

अतः जब शिक्षक की कथनी और करनी में अन्तर नहीं होगा तब उसके द्वारा प्रस्तुत आचरण छात्रों में मूल्यों के विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा।

हम जैसे वातावरण में रहते हैं। उसका हमारे व्यक्तित्व पर बहुत प्रभाव पड़ता है इसलिए एक शिक्षक होने के नाते हमारा दायित्व बनता है कि हम छात्रों में अच्छे मूल्यों का संवर्धन करने हेतु उन्हें अच्छा वातावरण देने का प्रयत्न करें। विद्यालय में सभी छात्रों के साथ समान व्यवहार किया जाए। सबको समान अधिकार दिए जाए, और सबके साथ उचित न्याय किया जाए। विद्यालय की उच्च परिपाटी बच्चों में उच्च आदर्शों एवं मूल्यों के विकास में विशेष सहायक होती है। एक कहावत है विद्यालय में प्रेरणादायी ध्येय वाक्य, महापुरूषों के उद्‌बोधन व देशभक्त महापुरूषों के चित्र लगाकर मूल्यों के विकास हेतु उपयुक्त वातावरण तैयार किया जा सकता है।

शिक्षा आयोग ने इसी बात को इन शब्दों में व्यक्त किया है

''विद्यालय का वातावरण, शिक्षकों का व्यक्तित्व तथा विद्यालय में उपलब्ध भौतिक सुविधाएँ छात्रों को मूल्योन्मुख बनाने में विशेष भूमिका निभाते हैं। विद्यालय की प्रातः कालीन सभा, पाठ्यक्रम एवं पाठ्य सहगामी गतिविधि या एवं पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ या क्रियाएँ, सभी धर्मों के धार्मिक उत्सवों का आयोजन, कार्यानुभव, खेलकूद, विषय क्लब, समाज सेवा ये सभी छात्रों में सहयोग व पारस्परिक सद्‌भाव, निष्ठा एवं ईमानदारी, अनुशासन एवं सामाजिक दायित्व आदि जीवन–मूल्यों को आत्मसात कराने में सहायक होते हैं।''

अध्यापक का कार्य शिक्षा देने तक ही सीमित न होकर छात्रों के सर्वांगीण विकास करना भी है अतः शिक्षक का यह कर्त्तव्य बनता है कि पाठ्य–पुस्तकों के किसी भी पाठ को पढ़ाते समय उनमें निहित आदर्शों और सिद्धांतों को बच्चों के सामने उजागर करें और यह कार्य भाषा व इतिहास इन दो विषयों के माध्यम से तो बड़ी आसानी से किया जा सकता है क्योंकि इनमें समाज के समस्त विश्वासों, आदर्शों और सिद्धांतों का समावेश होता है। बच्चे तो स्वभावतः संवेदनशील होते है बस हमें उन्हें समाज सम्मत कार्यों की जानकारी देनी होगी।

पुराने समय में जहाँ हमारी दादी, नानी आदि रामायण, महाभारत व अन्य देशभक्त नेताओं की कहानियाँ सुनाती थीं। वर्तमान में उनका स्थान हैरी पॉटर की किताबों, कार्टून नेटवर्क, अश्लील गीतों ने ले लिया है। अतः हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम अपनी गौरवमयी संस्कृति से उन्हें परिचित कराते रहें। इसके लिए विद्यालय में प्राचीन संस्कृति से सम्बद्ध पुस्तकों व अन्य वस्तुओं का संग्रहालय बनाया जा सकता है ताकि बच्चे अपनी सभ्यता व संस्कृति से जुड़े रहें, उनमें निहित ज्ञान को जान सकें।

शिक्षकों द्वारा छात्रों को वास्तविक जीवन के उदाहरण दे मूल्यों की ओर प्रेरित करना चाहिए उन्हें अपने देश के ऐसे महान व्यक्तियों के उदाहरण देने चाहिए जो आज भी अपने त्याग, महानता, समर्पण, देशभक्ति आदि के कारण याद किये जाते हैं जैसे दधीचि का त्याग, पन्नाधाय का बलिदान, अभिमन्यु की वीरता, युधिष्ठिर की सत्यता, महाराणा प्रताप का देशप्रेम आदि। महान वैज्ञानिकों, गणितज्ञों आदि की कहानी सुनाकर उनमें परिश्रम व लगन के प्रति सम्मान की भावना जागृत कर सकते हैं जैसे एडीसन बाल्यकाल में तो साधारण

बालक था पर अपने कठोर परिश्रम के कारण ही बिजली के बल्ब का आविष्कार कर सका। इससे प्रेरणा लेकर औसत दर्जे के विद्यार्थी भी परिश्रम करने की कोशिश करेगें।

शिक्षाप्रद चलचित्रों, नाटकों आदि के माध्यम से भी बच्चों को मूल्याधारित शिक्षा दी जा सकती है। अपने खाली समय में छात्रों को मूल्यप्रद नाटक खेलने को प्रेरित कर सकते हैं, जिससे छात्र खेल–खेल में कुछ प्रभावी मूल्य सीखने की कोशिश कर सकते हैं जैसे राजा हरिश्चन्द्र, श्रवण कुमार आदि।

शिक्षक विद्यार्थियों को प्रेरित कर सकते हैं कि यदि उन्होंने सप्ताह में कोई अच्छा कार्य या किसी की मदद की तो सभी विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाएँ इसके लिए सप्ताह का एक दिन निर्धारित किया जा सकता है तथा सबसे अच्छा कार्य करने वाले विद्यार्थी को पुरस्कृत व प्रोत्साहित भी किया जा सकता है। इसके माध्यम से एक ओर तो विद्यार्थियों को डायरी लेखन हेतु प्रेरित किया जा सकता है साथ–ही–साथ सभी विद्यार्थी प्रयास करेगें कि वे भी अपने अनुभव साथियों के साथ बाँट सकें, इसके द्वारा उनमें बड़ी आसानी से सहयोग, सहानुभूति आदि मानवीय मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

शिक्षक द्वारा अपने आसपास के परिवेश में छात्रों के माध्यम से एक विशेष अभियान किया जा सकता है जैसे मलिन बस्ती, पार्कों, गाँवों आदि में सफाई करके, अनपढ़ बच्चों को पढ़ाकर लोगों में जागरूकता लाने का प्रयास कर सकते हैं जिसके माध्यम से विद्यार्थियों में जिम्मेदारी की भावना एवं स्वस्थ विचारों का विकास करने में मदद मिलेगी।

निष्कर्ष

प्रत्येक कार्य को करने के दो रास्ते होतें हैं एक गलत और एक सही। गलत रास्ता हमेशा सरल होता है और सही रास्ता कठित। अतः व्यक्ति गलत कार्यों की ओर आसानी से प्रेरित होते हैं। एक शिक्षक होने के नाते हमें अपने विद्यार्थियों को सही व गलत में फर्क करना सिखाना होगा। उनहें सिखाना होगा कि सही रास्ता कठिन जरूर है पर उस पर चलकर वे एक आदर्श व्यक्ति बन सकते हैं। बच्चों में भय पैदा न करें कि अगर ज्यादा नम्बर लाओगे तभी सफल होगे वरन उनकी सोच सकरात्मक बनाएँ। उन्हें बताएँ कि शिक्षा का अंतिम लक्ष्य जीविकोपार्जन ही नहीं है वरन् अच्छा इंसान बनना भी है। अगर बच्चे डॉक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस., पी.सी.एस. आदि बन गए पर उनमें मानवीय मूल्य नहीं हैं। वे अच्छे इंसान नहीं हैं तो ये सब उपलब्धियाँ किसी काम की नहीं हैं, एक अच्छा मानव बनना भी जरूरी है। इसके लिए विद्यालयों में महापुरूषों के जन्मदिवस मनाए जाएँ ताकि विद्यार्थी उनसे प्रेरणा लें। केवल खानापूर्ति के लिए इनका आयोजन न हो क्योंकि ये वे क्षण होते हैं जब बच्चों में यह धारणा बनाई जा सकती है अच्छे कार्य करने वाले कभी मरते नहीं हैं वे युग–युग तक याद किये जाते हैं। इस प्रकार यदि अध्यापक, छात्र तथा समाज के लोग अपनी–अपनी जिम्मेदारियों को समझे तो निश्चित ही छात्रों में मूल्यों का निर्माण किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मानव संसाधन विकास मंत्रालय–राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986. भारत सरकार (शिक्षा विभाग) नई दिल्ली मई 1986
2. एन0सी0ई0आर0टी0– राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा – 2005. श्री अरविन्द मार्ग नई दिल्ली 2005
3. अग्रवाल, जे0सी0, 2008."मूल्यपरक शिक्षा",प्रकाशक – विद्या विहार, दरियागंज, नई दिल्ली
4. शर्मा, वी0 के0, 2009."शिक्षा तथा मूल्य", प्रकाशक – लाल पब्लिकेशन, मेरठ
5. मनु–स्मृति, हरगोविन्द शास्त्री द्वारा सम्पादित, चौखम्भा, वाराणसी